nbt.india
एक: सूते सकलम्

साक्षर भारत

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50; वार्षिक ₹ 5.00

फरवरी 2015 • वर्ष 20, अंक 02

प्रधानमंत्री द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की शुरुआत

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की शुरुआत की। योजना को 100 जिलों में लागू किया जाएगा। इस मौके पर इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी समेत, हरियाणा के राज्यपाल श्री कप्तान सिंह सोलंकी और मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर, केंद्रीय बाल विकास मंत्री श्रीमती मेनका गाँधी, मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी, संचार व प्रौद्योगिकी मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद समेत कई लोग मौजूद थे। ब्रांड एंबेसडर के रूप में सिने जगत की मशहूर अभिनेत्री माधुरी दीक्षित को चुना गया है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की शुरुआत करते हुए प्रधानमंत्री ने पाँच बच्चों को बैंक खाते भेंट किए। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा, ''पानीपत की धरती पर इस कार्यक्रम का आयोजन जिम्मेदारियों का अहसास कराने के लिए किया गया है। यहाँ हर किसी की सामूहिक जिम्मेदारी है। हम जब तक एक समाज के रूप में समस्या के प्रति संवेदनशील नहीं होंगे तो सिर्फ अपना नुकसान नहीं करेंगे बल्कि कई पीढ़ियों का नुकसान करेंगे। यह कार्यक्रम भले ही पानीपत की धरती पर हो रहा है, लेकिन यह संदेश हर गाँव, हर राज्य के लिए है। अगर बेटी पैदा नहीं होगी तो बहू कहाँ से लाओगे? हमारी सोच में यह दोगलापन कब तक चलेगा कि बेटी को हम नहीं पढ़ाएँगे, लेकिन बहू हमें पढ़ी-लिखी चाहिए।... मैं आपके बीच बहुत बड़ी पीड़ा लेकर आया हूँ कि कैसे बेटी को एक माँ के पेट में मार दिया जाता है। हम 21वीं सदी के लोग कहलाने के लायक नहीं हैं। हमारी सोच आज भी 18वीं सदी

के जैसी है। अगर घर में खाना बना हो और माँ ऊपर से बच्चों को घी दे रही हो तो बेटे को दो चम्मच और बेटी को एक चम्मच देती है। यह सोच सिर्फ हरियाणा की नहीं पूरे देश की है।... अगर बेटे बुढ़ापे में काम आते तो इतने वृद्धाश्रम नहीं खुले होते। ऐसी सैकड़ों बेटियाँ हैं जो माँ-बाप की सेवा करने के लिए अपने सपने चूर कर देती हैं। पूरा विश्व कल्पना चावला पर गर्व करता है। उसी हरियाणा में माँ के पेट में पल रही कल्पना चावला को मारकर हम दुनिया को क्या मुँह दिखाएँगे! अगर अवसर मिला तो बेटे से ज्यादा बेटियाँ कमाल करके दिखाती हैं। रिजल्ट देख लीजिए, बेटियाँ कमाल कर रही हैं। शिक्षक देख लीजिए, महिलाओं की संख्या ज्यादा है।''

केंद्रीय बाल विकास मंत्री मेनका गाँधी ने भी इस मौके पर 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए सभी से कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सहयोग माँगा। उन्होंने कहा, ''आज महिलाओं का अस्तित्व खतरे में है। 1000 लड़कों में सिर्फ 914 लड़कियाँ हैं। कहीं-कहीं तो यह आँकड़ा 800 से भी कम है।'' मेनका गाँधी ने प्रधानमंत्री का धन्यवाद देते हुए कहा कि मुझे खुशी है कि इन्होंने इस तरफ ध्यान दिया और हरियाणा से इसकी शुरुआत करने का मन बनाया। आज अगर हम इस जनसभा में खड़े हैं तो यह प्रधानमंत्री की पहल का नतीजा है। हरियाणा के कई गाँवों में कई सालों से लड़कियों का जन्म नहीं हुआ। सोचिए, लड़कियाँ आज कहाँ नाम रोशन नहीं कर रहीं– फौज, पुलिस, सरकार, आईटी सभी जगह महिलाएँ नाम रोशन कर रही हैं। कल्पना चावला भी हरियाणा से थीं। उन्होंने पूरी दुनिया में भारत का नाम रौशन किया।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना' की ब्रांड एंबेसडर माधुरी दीक्षित ने कहा, ''आज हम मंगल ग्रह तक पहुँच गए हैं, लेकिन आज भी लोगों की सोच पुरानी है। बच्चियों को आज भी कुछ लोग बोझ मानते हैं। घर, परिवार, समाज या देश तभी विकास करेगा जब महिलाओं का भी विकास होगा। सबसे पहले बच्चा अगर किसी से सीखता है तो वह माँ है। अगर माँ शिक्षित होगी तो बच्चा भी शिक्षा के साथ अपनी पहली शुरुआत करेगा। अगर घरों में बेटियाँ नहीं होंगी तो आप अपने बच्चों की शादी किससे करेंगे?'' माधुरी ने कहा, ''हम भी तीन बहनें हैं। हमारे माँ-बाप ने हमारे साथ कोई भेदभाव नहीं किया। मुझे एक माँ, बेटी, बहन और पत्नी के नजरिये से इस कार्यक्रम से बहुत उम्मीद है।''

भारत ज्ञान विज्ञान समिति, उत्तराखंड

केरल के एर्णाकुलम जिले में साक्षरता अभियान की सफलता के बाद भारत सरकार ने तय किया कि इस मॉडल को सारे देश में ले जाया जाए। इसी संदर्भ में भारत सरकार की पहल पर 1989 में ज्ञान विज्ञान कला जत्था सारे देश में चला। जत्थे की सफलता के बाद भारत ज्ञान विज्ञान समिति का गठन हुआ। वर्तमान में 23 राज्यों में समिति की इकाइयाँ हैं। समिति ने प्रारंभ में साक्षरता के क्षेत्र में कार्य किया। वर्तमान में समिति प्राथमिक शिक्षा, जन स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण, जनवाचन, बाल ब्रह्मांड मेलों, विज्ञान पत्रिकाओं का प्रकाशन, तकनीकी विकास, ग्रामीण पुस्तकालयों, ज्ञान विज्ञान विद्यालयों एवं ज्ञान विज्ञान केंद्रों का संचालन जन सहयोग से कर रही है। निराशावादी माहौल में एक आशावादी दृष्टिकोण व वैज्ञानिक जागरूकता पैदा करते हुए एक वैज्ञानिक और तार्किक समाज का निर्माण करना समिति का मुख्य लक्ष्य है।

समिति ने जन वाचन आंदोलन के तहत लगभग 400 पुस्तकों की सीरीज तैयार की है जिसमें विश्व के मशहूर लेखकों की ज्ञान विज्ञान तथा लोक संस्कृति पर आधारित लोक कथाएँ व लोक गीतों की पुस्तकें हैं। जनवाचन के तहत गाँव स्तर पर पुस्तकों का वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति को प्रोत्साहित करने का लक्ष्य है। ये पुस्तकें जहाँ आम पाठकों के लिए काफी उपयोगी हैं, वहीं खेल-खेल में शिक्षा व विज्ञान का ज्ञान कराने के उद्देश्य से भी ये पुस्तकें बच्चों, स्कूलों व पुस्तकालयों के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय हैं।

साभार : ज्ञान विज्ञान बुलेटिन

मिसाल

एक आदर्श शिक्षण संस्थान : लड़कियों का, लड़कियों द्वारा, लड़कियों के लिए

उस कॉलेज का नाम बाबा आया सिंह रियाड़की कॉलेज है, लेकिन यहाँ कक्षा एक से एम.ए. तक पढ़ाई होती है, सो, इसे एक शिक्षण संस्थान कहा जा सकता है– आदर्श शिक्षण संस्थान। क्योंकि यह लगभग हरेक मामले में आदर्श है। पंजाब के गुरदासपुर जिले के तुगलवाला गाँव स्थित इस संस्थान को 'पंजाब का शांतिनिकेतन' समझा जाता है। दरअसल, 'आत्मनिर्भरता' इस कॉलेज की सबसे बड़ी विशेषता है। परिणामतः, यहाँ पढ़ने वाले लड़के-लड़कियों की फीस नाममात्र की होती है। सन् 1975 में महज 34 लड़कियों से शुरू इस कॉलेज में आज 3,500 विद्यार्थी पढ़ते हैं जिनमें 2,500 लड़कियाँ हैं। कहना न होगा कि कॉलेज के प्रशासन से लेकर शिक्षण तक में लड़कियों का दबदबा है। इस संस्थान की प्रणाली इस तरह से विकसित की गई है कि बाहर से न किसी शिक्षक की बहाली की जाती है, न ही प्रशासनिक कार्य हेतु किसी बाहर वाले को नियुक्त किया जाता है। यह सारा कार्य यहाँ के लड़के-लड़कियाँ करते हैं। व्यवस्था यह है कि ऊँची कक्षा के विद्यार्थी अपने से नीची कक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं। अगर कोई विद्यार्थी किसी एक विषय में कमजोर है तो इस विषय का अधिक जानकार कोई विद्यार्थी उसे पढ़ाएगा।

हॉस्टल में खाना बनाने के लिए लड़कियों के अनेक समूह बने हैं। एक समूह का क्रम दो महीने पर आता है। 15 एकड़ में फैले कॉलेज में 10 एकड़ में खेती होती है। जरूरत भर का अनाज और सब्जियाँ वहाँ उगा ली जाती हैं। कॉलेज का अपना सोलर पावर स्टेशन है और गोबर गैस प्लांट भी। इसी गैस पर खाना बनता है। सूखी घास और पत्ते भी इस हेतु प्रयुक्त होते हैं। पशुओं के लिए घास कैसे काटी जाये, इसे सिखाने की भी 'क्लास' लगती है। परिसर में ही आटा चक्की, मसाला चक्की, तेल पिराई और गन्ने से रस निकालने की मशीनें भी लगी हैं। पूरे स्कूल में न कोई नौकर है, न चपरासी, न धोबी, न दरबान। विद्यार्थी अपना सारा काम स्वयं करते हैं। हॉस्टल की वार्डन भी लड़के-लड़कियाँ ही हैं और दरबान भी। कॉलेज में जब कोई निर्माण कार्य चलता है तो ये लड़के-लड़कियाँ ही 'मजदूर' भी बन जाते हैं।

कॉलेज में एक बड़ा-सा गोदाम भी है। यहाँ चम्मच से लेकर पंखे तक का कबाड़ रखा हुआ है। खास बात यह है कि कॉलेज इस कबाड़ को बेचकर ही प्रतिवर्ष दो लाख रुपये तक की आय कर लेता है। यह राशि हर साल लगभग 150 बच्चों को मुफ्त में शिक्षा दी जा सकने लायक है। कॉलेज में हर तरह के काम के लिए एक पाँच सदस्यीय कमेटी है। यही संबंधित क्षेत्र से जुड़े सारे निर्णय करती है। गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय से जुड़े इस कॉलेज की खासियत यह है कि आज तक यहाँ किसी ने नकल नहीं की। आत्मनिर्भरता के साथ अच्छी पढ़ाई इसे एक आदर्श शिक्षण संस्थान बनाती है। सरकार से बगैर कोई सहयोग लिये, अपने ही संसाधनों से संचालित यह शिक्षण संस्थान एक ऐसा 'आदर्श' संस्थान है जहाँ के छात्र-छात्राएँ आवश्यकता पड़ने पर अपने प्रिंसिपल तक पर जुर्माना लगा देते हैं। कॉलेज के प्रिंसिपल श्री विर्क कहते हैं, ''यहाँ मेरा कोई रोल नहीं है। पूरा कॉलेज छात्र-छात्राएँ खुद ही चलाते हैं।'' शांतिनिकेतन की तर्ज पर चल रहा यह कॉलेज वाकई काबिले-तारीफ है और प्रेरणा देने वाला है।

'तहलका' पत्रिका में प्रकाशित रपट का सार-संक्षेप

नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत कुछ श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियाँ : एक परिचय

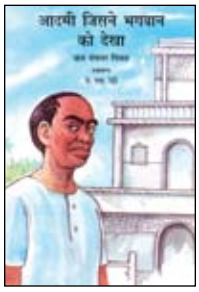

आदमी जिसने भगवान को देखा

बाल गंगाधर तिलक पृ. 32 ₹ 10.00

रूपांतरण : जे.एल. रेड्डी

चेचक के दाग वाले, गाँव में अलग-थलग रहने वाले गवरय्या की बीवी के भागने की खबर गाँवभर में फैली थी। गवरय्या की बीवी एक दरजी संग भाग गई थी। उसकी पहली बीवी पहले ही मर गई थी। गवरय्या एक बदनाम बाप का बेटा था, जिसका अतीत अच्छा नहीं था। वह गाँव में चमड़े का काम कर अच्छा पैसा कमाता था, पर गाँव के धर्माधिकारी, सरपंच सहित गाँववालों के नफरत का शिकार था। एकाकी और बदनाम बचपन वाला गवरय्या भी गाँववालों से कोई सरोकार नहीं रखता था। न लेनी, न देनी। घनघोर बरसात के मौसम में गाँव में एक दिन हल्ला हुआ—वह लौट आई, वह लौट आई! गवरय्या को भी मालूम पड़ा। घर में देखा, उसकी भागी बीवी भरा पेट लेकर लौटी थी और औंधी पड़ी थी। सरपंच आदि भी वहीं थे। गवरय्या कुदाल उठाकर दौड़ा। सबने हत्या जैसे घृणित कर्म से उसे रोका। कहा, बस, कुलटा को घर से निकाल दो। ऐसा कह सब घर से खिसक गए। इधर, गवरय्या ने बीवी को देखा, वह हाथ जोड़कर बेबस आँखों से देख रही थी। उसी रात गवरय्या ने सपने में भगवान को देखा, बीवी को देखा और आग में जल रहे दुधमुँहे शिशु को। ऐसा भयावह स्वप्न देखने पर उसकी नींद टूट गई। देखा, बीवी ने अँधेरे में बच्चा जना है। उसने एक बड़ा निर्णय लिया—वह बीवी को घर में रखेगा और शिशु को पालेगा भी, क्योंकि उसने भगवान को देखा था।

ISBN 978-81-237-4350-9

मुरब्बी

विष्णु प्रभाकर पृ. 22 ₹ 14.00

रूपांतरण : रमाशंकर श्रीवास्तव

गाँव के बीचोबीच मुरब्बी (मुखिया) की दूकान थी। उमर के चौथेपन में होते हुए भी ठसक बची हुई थी। दान और गाली एक ही सुर में सहज भाव से देने में सिद्धहस्त थे। 'राम थारा भला करे' के तकियाकलाम से बात शुरू करते थे या अंत। छोटे-से बाजार में उनकी दूकान की अपनी पहचान थी, दूकान से ज्यादा उनकी। किसी ग्राहक से बात करते तो बात बतंगड़ तक पहुँच जाती। पर लोग उनका स्वभाव जानते, सो, बुरा न मानते। किसी ने उनके बासमती चावल पर कोई टीका क्या कर दी उन्होंने बाल की खाल खींचने की हद तक उसे अच्छे से पढ़ा दिया। काम की धुन में इस कदर लगते कि खाना तक दुश्वार। चारों तरफ बिछी टोकरियों के बीच चौकी पर बैठते तो पाँव सुन्न होने पर ही उठते। बोलने में बम बहादुर। एक दिन भतीजे राधे ने कहा कि मुनव्वर ने उसके उधार न सधाए तो वह नालिश कर देगा। मुनव्वर मुरब्बी का यार था। मुनव्वर मुरब्बी के कई बार काम आ चुका था। प्रत्यक्ष में तो उसने मुनव्वर को इस मामले में कुछ न कर पाने की बात कही, पर घर जाकर कुछ रुपये बहू से मँगवाकर राधे को यह कहते हुए दे दिए कि मुनव्वर ने दिए हैं। राधे भौंचक था।

ISBN 978-81-237-4618-0

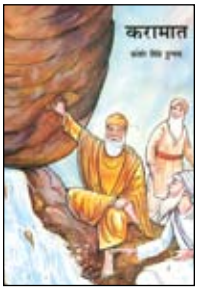

करामात

कर्तार सिंह दुग्गल

पृ. 16 ₹ 7.00

बाबा नानक के उस चमत्कार की कहानी है इसमें जब बाबा नानक ने अपने पंजे से पहाड़ के बड़े-से टुकड़े को रोक लिया था और उनके पंजे का निशान उस पत्थर पर आज भी है। वह स्थान 'पंजा साहब' कहलाता है। किस्सा यूँ है कि एक बार बाबा नानक घूमते हुए हसन अब्दाल के जंगल में जा निकले। धूप और गरमी से सबका बुरा हाल था, पर एक शिष्य, मरदाने को ऐसी जबरदस्त प्यास लगी कि वह आगे बढ़ न सका, वहीं बैठ गया। बाबा नानक ने उसकी जिद पर ध्यान लगाया और बोले, मरदाने, इस पहाड़ी के ऊपर वली कंधारी नाम के दरवेश की कुटिया है। वहाँ कुआँ है, वहीं पानी मिलेगा। मरता क्या न करता! मरदाने दम लगाकर दौड़ा और पहुँच गया दरवेश के पास, पर दरवेश को जब उसका परिचय मालूम पड़ा तो उसने पानी देने से इनकार कर दिया। बाबा नानक ने उसे तीन बार भेजा और दरवेश ने हर बार उसे प्यासा लौटा दिया। अंत में जब मरदाना बेहोश हो गया, बाबा नानक के हाथ का अपनी पीठ पर स्पर्श पा होश में आया और बाबा के कहने पर सामने वाले पत्थर को उखारकर अलगाया। वहाँ पानी का सोता फूट पड़ा, और उधर दरवेश के कुएँ का पानी एकदम सूख गया। गुस्साए वली ने जो चट्टान लुढ़काए उसे बाबा नानक ने अपने पंजे से रोक लिया।

ISBN 81-237-4201-0

चंदर का सुख

सीतेश आलोक

पृ. 16 ₹ 9.00

चंदर एक शरारती बालक है। संजू के दादा जी की दवा उन्हीं के पास से मिली थी, पर दादा जी ने सारे घर को किस कदर नाच नचाया था यह याद कर चंदर ने भी अपने घर में इसी तरह के चुहल की सोची। उसने दादा जी का चश्मा छुपा दिया। इस चश्मे को खोजने के चक्कर में घरभर में हड़कंप मचा रहा। बाद में चश्मा दादा जी के पास ही मिला। इसी तरह, एक बार बाबू जी की घड़ी छुपाकर वह स्कूल चला गया। लौटने पर चंदर को पता चला, घड़ी बाबू जी के बैग में ही रखा था। फिर एक दिन चंदर ने माँ के चाबी का गुच्छा सब्जी की टोकरी में छुपा दिया और स्कूल चला गया। लौटने पर देखा, घर में आरोप-प्रत्यारोप का दौर चल रहा है। बाद में घर की नौकरानी सुखिया ने टोकरी से गुच्छा खोजकर दिया तो घर में हँसी का फव्वारा फूट पड़ा। अब बाबू जी को यह कहने का मौका मिल गया कि तुम बूढ़ी हो गई हो। लेकिन चंदर ने जब अपनी बड़ी बहन के सोने की हार छुपा दी तो नतीजे में घर में पुलिस पहुँच गई और बेचारी सुखिया को अच्छी मार पड़ी। चंदर ने सच बता दिया, माफी माँगी और अब उसने सुखिया को शिक्षित करने का भार उठा लिया।

ISBN 978-81-237-4789-7

पहलवान की ढोलक

फणीश्वरनाथ रेणु पृ. 24 ₹ 13.00

रूपांतर : भारत यायावर

लुट्टन सिंह पहलवान अपने पूरे इलाके में मशहूर थे। एक बार श्याम नगर के दंगल में उसने चाँद सिंह उर्फ 'शेर के बेटे' पहलवान को पटकनी दी थी। तभी से नगर के बूढ़े राजा साहब ने उसे राज पहलवान के रूप में दरबार में रख लिया। इस दंगल में लुट्टन ढोल की हर थाप पर निकली ध्वनि का अन्वय कुछ ऐसे करता कि उसमें ऊर्जा और शक्ति भर जाती और अंततः वह विजेता होता। जैस, 'चट्टाक-चट्-धा' का अर्थ उसने लगाया, उठा, पटक दे! समय गुजरता रहा और 15 वर्ष बीत गए। पहलवान सदैव अपराजेय बना रहा। उसे दो बेटे हुए। दोनों बेटे भी पहलवानी में दाँव आजमाने लगे। इस बीच राजा साहब गुजर गए और नए राजकुमार ने पहलवान और उनके बेटों का भरण-पोषण बंद कर दिया। श्याम नगर में दंगल की जगह घोड़े की रेस ने ले ली। पहलवान अपने दोनों बेटों को ले गाँव लौट आया। गाँव में ये मजूरी करते और पेट पालते। एक बार गाँव में महामारी फैली और पहलवान के दोनों बेटे उस महामारी के चपेट में आ गए। पहलवान न रोया, न विलाप किया। चार-पाँच दिन बाद लोगों को पहलवान के घर से ढोलक की आवाज नहीं सुनाई पड़ी। जाकर देखा तो पहलवान 'चित्त' पड़ा था। पहलवान को गाँववाले आज भी याद करते हैं और उसके ढोलक की आवाज को सुनने की कोशिश करते हैं।

ISBN 81-237-0897-1

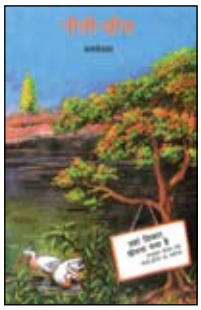

नीली झील

कमलेश्वर पृ. 22 ₹ 14.00

रूपांतर : रमेश थानवी

एक थी नीली झील। पानी से लबालब भरी, पेड़ों के घने झुरमुट से घिरी। एक अँगरेज कलेक्टर को यह झील बहुत भायी थी। उसने यहाँ तक पहुँचने के लिए पक्के रास्ते बनाने के निर्देश दिए। महेसा इसी क्षेत्र का था और सड़क बनाने के काम में वह भी शामिल था। वह बिंदास मिजाज का था। चिड़ियों का कलरव उसे मोहता था और पर्यटकों में शामिल महिलाओं पर वह फिदा होता था। इन सैलानियों में अगर कोई बंदूक से चिड़ियों का शिकार करता तो वह बेहद मर्माहत हो जाता। महेसा सैलानियों को झील और उसके भूगोल की अच्छी जानकारी देता। महेसा अपना दुख पारबती पंडिताइन से साझा करता। गाँव की विधवा स्त्री पारबती सुंदर थी, पर ठसकदार भी थी। पारबती ने महेसा से छिपकर ब्याह कर लिया था। वह महेसा से उम्रदराज थी। पारबती का गाँव से सूद पर पैसा देने का धंधा था। रुपये-पैसे की वापसी भी वही देखती। महेसा मस्त रहता। एक बार पारबती ने उससे गाँव में एक मंदिर बनाने की इच्छा जताई। आज-कल करते-करते पारबती के पाँव भारी हो गए। विधि का विधान, जचगी के समय वह चल बसी। महेसा पगला गया। मंदिर के नाम पर वसूले सारे पैसों से उसने चुंगी वालों की बोली में नीली झील खरीद ली और झील के पास वाले रास्ते के एक पेड़ पर तख्ती टाँग दी – यहाँ शिकार करना मना है।

ISBN 81-237-1763-6

पढ़ने का हक

नासिरा शर्मा

(भाग-3)

"मंजू... ओ मंजू!" गोपी ने आवाज दी।

दोपहर तक गोपी की झुग्गी पर रोना पीटना मच गया। मंजू सुबह की गई शाम तक लौटी न थी। कई लोगों ने कहा भी कि पुलिस में रपट लिखवा आओ। मगर जो लोग चाय पीने आए थे उन्हें छोड़कर कैसे जाते? पैसे भी तो चाहिए। पहले ही गोपी बाजार से देर से लौटा था। ऊपर से मंजू गायब! अकेली कौशल्या क्या-क्या सँभालेगी? सो, दोनों चिंता भरे मन को यह कहकर समझा लेते कि यहीं कहीं खेलने गई होगी, कुछ देर बाद लौट आएगी।

कुछ देर बार मंजू लौट आई। मंजू बिजली के खंभे से चिपकी पहले माँ-बाप को ताकती रही। फिर चुपचाप पत्थर पर बैठ जूठे बरतनों को धोने लगी। एकाएक दोनों की नजरें बेटी पर पड़ी। उन्हें कुछ अटपटा नहीं लगा। एकदम से कौशल्या चौंककर बोली, "मंजू आये गई है।" झुग्गी से भीड़ छँटने लगी थी। गोपी ने आखिरी चाय छान बेटी की तरफ संतोषभरी नजरों से ताका। फिर दुलारभरे स्वर में पूछा :

"कहाँ गई रहीं बिट्टो रानी? तोहार माई बड़ी परेसान रही।"

"स्कूल।" मंजू ने पिता की पुचकार सुन सच कहा।

"स्कूल?" कौशल्या और गोपी एक साथ चीख पड़े।

"वहाँ इमली के पेड़ के नीचे बैठकर हम बच्चन का ताकत रहे।" उत्साह से मंजू बोली।

"काहे?" दोनों अकबकाए से बोली।

"हम भी पढ़ने जाएँगे बापू।" मंजू ने भोलेपन से कहा।

"यहाँ काम कौन करहिये?" गोपी ने कमर पर हाथ धरा।

"स्कूल से लौटकर हम करेंगे बापू!" मंजू ने इतना कह खुशी-खुशी गंदे प्याले समेटे।

"अच्छा! बित्ता भर की छोरी, गज भर की लंबी जबान! ठहर जा, बताइत हैं!" गोपी को तैश आ गया। मंजू की पीठ पर तड़ातड़ हाथ बरसा। "छोड़ो...! लड़की को मार डलहियो का?" कौशल्या लपकी।

"मारो बापू... खूब मारो... मर जाएँगे, मगर स्कूल जरूर जावेंगे!" मंजू रोते हुए बोली।

"गैर की नहीं, अपनी छोकरी रही।" कौशल्या मंजू को लिपटा उसकी पीठ पर उभरे निशाल सहलाते हुए बोली।

रात को किसी ने खाना नहीं खाया। कौशल्या मंजू के साथ कोठरी में थी। गोपी घुटनों पर सर धरे वहीं झुग्गी की बेंच पर बैठा रहा। उसका मन कड़वा हो उठा था। उसकी आँखों के सामने बेटी का रोता चेहरा घूम रहा था। रात गहरी हो गई तो वह वहीं बेंच पर लेटकर आसमान ताकते लगा, जहाँ काले अँधेरे के अलावा कुछ न था।

हर दिन की तरह दिनेश झुग्गी पर पहुँचा। गोपी ने चाय छानी और दो बिस्कुट के साथ आगे बढ़ा दी। कौशल्या सब्जी काट रही थी। दिनेश मन-ही-मन कुछ ठानकर आया था। उसकी आँखें मंजू को ढूँढ़ रही थीं। उसके बहाने बातचीत बढ़े तो वह गोपी को छठी का दूध याद कराए। मंजू नजर नहीं आ रही थी। खाली प्याली जब वह रखकर पैसे निकालने लगा तो धैर्य छोड़ पूछ बैठा—

"मंजू नहीं दिख रही है आज?"

"स्कूल जावे की तैयारी करत है।'' गोपी ने पैसे लेते हुए कहा।

"स्कूल...? क्या कह रहे हो? मुझे चिढ़ा रहे हो? इस हँसी-ठिठोली का अंजाम पता है?" दिनेश को गोपी का जवाब खल गया।

"बाबू जी! अब का बतावें? कल भाग गई थी स्कूल... शाम को लौटी तो बहुत मारा। सारी रात सोया नहीं... हम मजदूर लोग मेहनत को ही अपनी शिक्षा समझते हैं... आपकी बात समझ न पाये... अभी उसको लेकर नाम लिखवाने जाऊँगा।" कुछ परेशान-सा गोपी बोला।

"सच कह रहे हो?" दिनेश को सहसा विश्वास नहीं हुआ।

"वह देखो!" गोपी ने कोठरी से निकलती मंजू की तरफ इशारा किया! उसने नई फ्रॉक पहनी थी।

"मैं भी साथ चलूँगा।" दिनेश ने खुश होकर कहा। "बाबू जी! आपके काम का हरजा न होगा?'' गोपी ने जूता पहनते हुए पूछा।

"बिलकुल नहीं... आज तो मेरी छुट्टी है।"

गोपी और दिनेश मंजू के संग सड़क पार कर स्कूल की ओर चल पड़े। कौशल्या झुग्गी पर अकेली खड़ी चाय छान रही थी। वह मन-ही-मन दिनेश की बात दोहरा रही थी, "मंजू का बचपन इन कामों में बरबाद मत कर गोपी! उसे स्कूल भेज। यह उसका हक है... यह काम तो वह पढ़ाई के साथ भी कर सकती है। आखिर सारी उम्र पड़ी है।"

रा.पु. न्यास से प्रकाशित पुस्तक 'पढ़ने का हक' से समापन अंश

हमारा दिल – एक पंप

दिल के बारे में कवियों और शायरों ने बहुत कुछ कहा है। कुछ ने तो इसकी तुलना शीशे तथा पत्थर से की है। दरअसल, यह मांस का बना एक पंप है। यह हमारी छाती के बायें हिस्से में होता है। यदि आप अपनी छाती की बायीं ओर हाथ रखें तो दिल की धड़कन महसूस कर सकते हैं। दौड़ने के बाद यह धड़कन तेज हो जाती है।

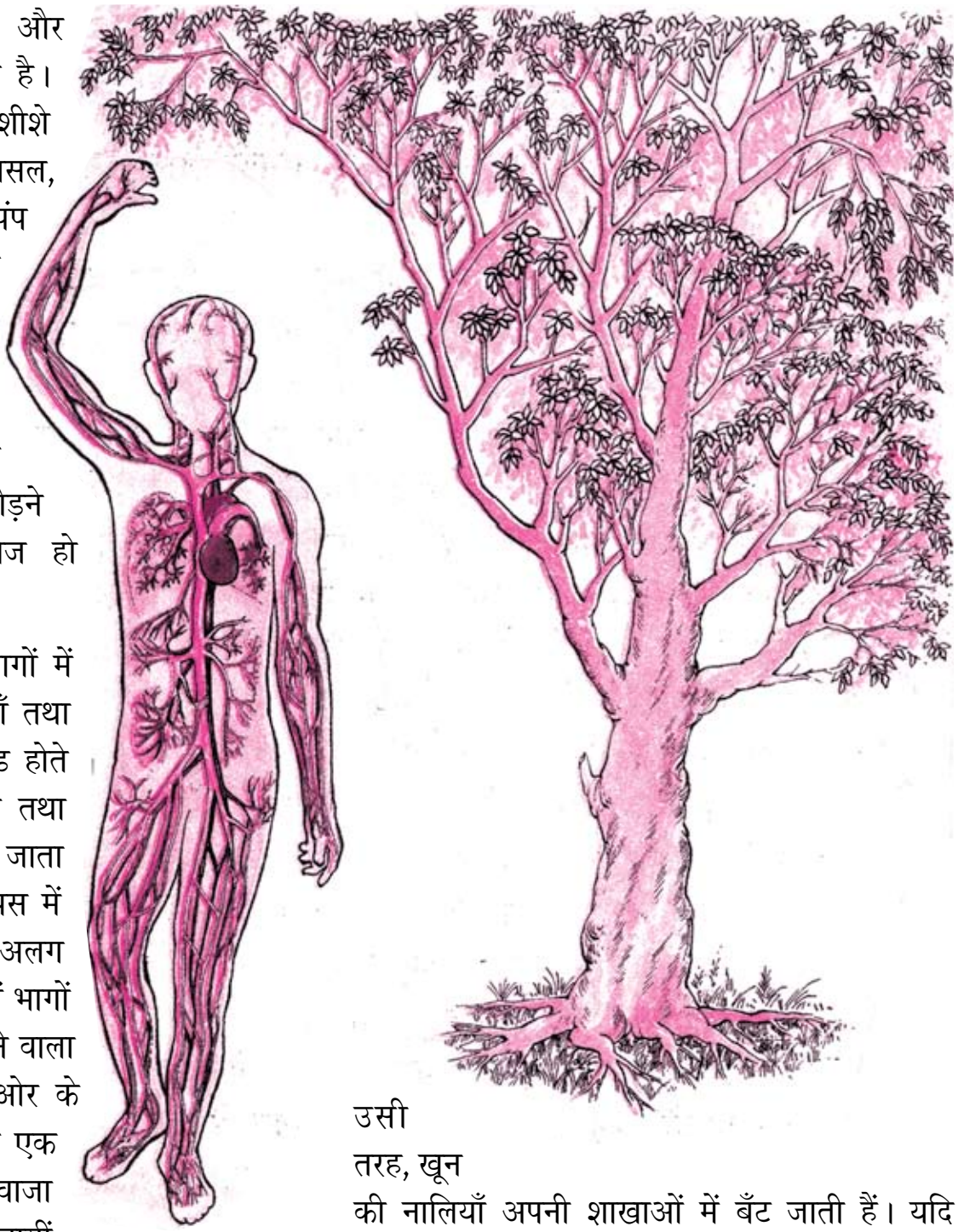

हमारा दिल मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है– दायाँ तथा बायाँ। हर भाग में दो खंड होते हैं। एक में खून आता है तथा दूसरे में इसे पंप किया जाता है। दिल के चार खंड आपस में एक-दूसरे से पटों द्वारा अलग होते हैं। दायीं ओर के दोनों भागों के बीच में एक तरफ खुलने वाला दरवाजा होता है। बायीं ओर के दोनों भागों के बीच में भी एक तरफ खुलने वाला दरवाजा होता है। परंतु दायीं और बायीं तरफ का खून दिल में अलग-अलग ही बहता है। बायें भाग में ऑक्सीजन वाला खून फेफड़ों से आता है। इसे यहाँ से शरीर के सभी भागों में भेजा जाता है। दायें भाग में शरीर के सभी भागों का गंदा खून आता है। यहाँ से इसे फेफड़ों में भेजा जाता है।

उसी तरह, खून की नालियाँ अपनी शाखाओं में बँट जाती हैं। यदि किसी अंग की खून की नालियों में रुकावट आ जाये तो वह अंग काम करना बंद कर सकता है।

(...जारी)

रा.पु. न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'मानव शरीर'(ले.: रमेश बिजलानी) से एक अंश

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2015-17
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2015-17
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/2/2015

मोच

शरीर के हर जोड़ पर कई मांसपेशियाँ काम करती हैं। किसी एक या अधिक मांसपेशी के फटने से ही मोच आती है। मांस फटना इसी का दूसरा नाम है।

इसमें काफी तकलीफ होती है। दर्द रहता है। कुछ ही देर बाद उस हिस्से में सूजन होने लगती है। यह सूजन कुछ रोज तक बढ़ती है। ठीक इलाज न मिलने से उम्रभर के लिए दिक्कत हो सकती है।

क्या करें :

- जिस अंग में मोच आई हो, उसे किसी मजबूत चीज का सहारा दें। उसे हिलाएँ-डुलाएँ नहीं। न ही उस पर वजन डालें। • मोच खाए अंग पर तुरंत और 24 घंटों तक बार-बार ठंडे पानी की पट्टियाँ रखें। • फिर 24 घंटे के बाद गर्म पानी का सेंक करें। पानी में थोड़ा-सा नमक भी मिला लें। इससे सूजन उतरने में मदद मिलेगी। • मोच खाए अंग को शरीर की अपेक्षा ऊँचा रखें। पैर में चोट हो तो उसके नीचे तकिया रख लें। बाँह में चोट होने पर उसे ऊपर उठाकर किसी चीज से बाँध दें। ऐसा करने से चोट में सूजन बढ़ेगी नहीं।

क्या न करें :

- जिस समय चोट लगे, उस समय ज्यादा बहादुरी न दिखाएँ। कुछ लोग इसी चक्कर में चोट को बढ़ा लेते हैं। • जब तक चोट पूरी तरह ठीक नहीं हो जाती, उस पर बिलकुल वजन न डालें। • मोच खाए अंग की मालिश न करवाएँ। इससे मामला बिगड़ सकता है

रा.पु.न्यास, भारत से प्रकाशित डॉ. यतीश अग्रवाल द्वारा लिखित पुस्तक 'तुरंत उपचार' से एक अंश

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत
nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स प्रा.लि., डब्ल्यू-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II नई दिल्ली-110020 से टाइपसेट एवं मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070